(IJRSSH) 2023, Vol. No. 13, Issue No. II, Apr-Jun **e-ISSN: 2249-4642 p-ISSN: 2454-4671**

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के पर्यटन विकास में आ रही समस्याएं एवं संभावनाएं

***सुश्री कृष्णा शर्मा, **मो. कैश**

**रिसर्च स्कॉलर, **पर्यवेक्षक,*

पृथ्वी विज्ञान संकाय, वनस्थली विद्यापीठ

Problems and Possibilities in Tourism Development of Keoladeo National Park[1]

***Ms. Krishna Sharma, **Mohd Kaish**

**Research Scholar, **Supervisor*
Department of Earth Science, Banasthali Vidyapith

DOI:10.37648/ijrssh.v13i02.014

Received: 05 March 2023; Accepted: 17 April 2023; Published: 29 April 2023

सार

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान एक ऐसा स्थान हुआ करता था जहाँ लोग धार्मिक यात्राओं या केवल मनोरंजन के लिए जाते थे, लेकिन अब यह एक ऐसा स्थान बनता जा रहा है जहाँ लोग पर्यटन के माध्यम से पैसा कमाने जाते हैं। यह राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। सरकार ने पर्यटन को और अधिक विकसित करने में मदद करने के लिए एक नई योजना बनाई है, जिसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि आगंतुकों के ठहरने के लिए अच्छे होटल हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि होटल क्षेत्र में रहने वाले लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अधिक पैसा बनाने में मदद मिलती है। इसलिए केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में होटल व्यवसाय को बेहतर बनाने पर ध्यान देने की योजना है।

संकेतशब्द *– केवलादेव; राष्ट्रीय; अर्थव्यवस्था; पर्यटन; धार्मिक*

ABSTRACT

Keoladeo National Park used to be a place where people used to go for religious pilgrimages or just for fun, but now it is becoming a place where people go to earn money through tourism. It is good for the economy of the state. The government has made a new plan to help in increasing tourism, which includes making sure that there are hotels for the tourists. This is important because hotels provide employment to people living in the area, which helps them make more money. That's why there is a plan to focus on improving the hotel business in Keoladeo National Park.

Keywords: *Keoladeo; National; economy; tourism, religious*

[1] How to cite the article: Sharma K., Kaish M., (Apr 2023); Keoladeo Rashtriya Udyan ke Paryatan Vikas me aa rahi Samasyayen evum Sambhavnayen; *International Journal of Research in Social Sciences and Humanities*, Vol 13, Issue 2, 176-183, DOI: http://doi.org/10.37648/ijrssh.v13i02.014

(IJRSSH) 2023, Vol. No. 13, Issue No. II, Apr-Jun e-ISSN: 2249-4642 p-ISSN: 2454-4671

परिचय

पर्यटन तब होता है जब लोग मौज–मस्ती करने और विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने के लिए यात्राओं पर जाते हैं। यह लोगों के लिए पैसे कमाने का एक तरीका भी है। भारत के एक राज्य राजस्थान में पर्यटन वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत सारे लोग घूमने आते हैं। इसका मतलब है कि बहुत से लोगों के पास पर्यटन उद्योग में नौकरियां हैं। राजस्थान एक विशेष स्थान है क्योंकि इसमें देखने और करने के लिए कई दिलचस्प चीजें हैं, जैसे किले और महल। राजस्थान आने वाले लोगों को विशेष अतिथि की तरह माना जाता है। कई प्रसिद्ध लेखकों ने राजस्थान के बारे में अच्छी बातें कही हैं क्योंकि यह घूमने के लिए बहुत अच्छी जगह है।

बहुत समय पहले दूसरे देशों से बहुत कम लोग राजस्थान घूमने आते थे। लेकिन 1992 में और लोग आने लगे और अब हर तीन में से एक आगंतुक दूसरे देश से है। 1997 में बहुत सारे लोग घूमने के लिए राजस्थान आए – अन्य देशों से 6 लाख से अधिक लोग! सरकार को लगा कि पर्यटन वास्तव में महत्वपूर्ण है, इसलिए उन्होंने 1989 में इसे एक आधिकारिक उद्योग बना दिया। 2007 में, और भी लोग घूमने आए – अन्य देशों से 14 लाख से अधिक और भारत से 2.5 करोड़ से अधिक! और 2008 में और भी लोग आए – 3.66 करोड़ से ज्यादा!

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान भारत में एक बहुत ही खास जगह है जहाँ बहुत से लोग जाना पसंद करते हैं, यहाँ तक कि दूसरे देशों के लोग भी। कई लोग यहां अच्छा महसूस करने और आशीर्वाद लेने आते हैं। यह अनंतपुर से लगभग 80 किलोमीटर दूर है। पुट्टपर्थी में मंदिर और आश्रम भी पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं क्योंकि वे बहुत ही अनोखे और खास हैं।

बहुत से लोग वास्तव में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान नामक एक विशेष स्थान को देखने आते हैं। वे जी सत्य साईं बाबा नाम के एक प्रसिद्ध व्यक्ति को देखने और होटलों में ठहरने के लिए आते हैं। इससे होटल का कारोबार बढ़ता है और लोगों को नौकरी मिलने में मदद मिलती है। चुनने के लिए बहुत सारे विभिन्न प्रकार के होटल हैं। मौसम आमतौर पर गर्म और शुष्क होता है, लेकिन कभी–कभी बारिश होती है। पार्क में घूमने के लिए मंदिर और अस्पताल जैसे कई स्थान हैं। दूसरे देशों से बहुत से लोग बाबा के दर्शन करने आते हैं और भारतीय संस्कृति के बारे में सीखते हैं। इससे भारत की अर्थव्यवस्था को मदद मिलती है और लोग बहुत समर्पित महसूस करते हैं।

साहित्य का अवलोकन

राजेश कुमार व्यास 2004 पर्यटन लंबे समय से भारतीय परंपरा का हिस्सा रहा है और अब इसे एक महत्वपूर्ण उद्योग माना जाता है। भले ही कोई भौतिक उत्पाद नहीं बनाया जाता है, फिर भी यह रोजगार प्रदान करता है और पैसा लाता है। सरकार ने इसके महत्व को पहचाना और इसे विशेष दर्जा दिया है। राजस्थान में पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए बहुत मददगार हो सकता है। यह पुस्तक बताती है कि पर्यटन

राजस्थान में समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को कैसे प्रभावित करता है और इसका प्रबंधन कैसे किया जाता है।

अनुपम पाण्डेय 2007 यह किताब बताती है कि लोग पर्यटन उद्योग के लिए कैसे भुगतान करते हैं और पैसा कहां से आता है। यह उन समस्याओं और समाधानों के बारे में भी बात करता है जो पर्यटन में लोगों द्वारा पैसा निवेश करने पर सामने आती हैं।

राजेश शुक्ला एवं रश्मि शुक्ला 2011 पर्यटन तब होता है जब लोग मौज–मस्ती करने और आराम करने के लिए विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हैं। यह उस जगह की अर्थव्यवस्था में मदद करता है जहां वे जाते हैं क्योंकि वे भोजन और स्मृति चिन्ह जैसी चीजों पर पैसा खर्च करते हैं। कुछ देश दूसरों की तुलना में पर्यटन के लिए बेहतर हैं क्योंकि उनके पास अलग–अलग चीजें हैं जैसे अच्छा मौसम या दिलचस्प संस्कृतियां। दुनिया भर के लोग भारत जैसी जगहों पर जाना पसंद करते हैं क्योंकि यहां देखने और करने के लिए कई अलग–अलग चीजें हैं।

राजेश कुमार व्यास 2017 भारत वास्तव में एक विशेष देश है क्योंकि इसमें देखने और करने के लिए बहुत सारी अलग–अलग चीजें हैं। बड़े बर्फीले पहाड़, वास्तव में गर्म झरने, ठंडी गुफाएँ, सुंदर झीलें, दूर के रेगिस्तान, मजेदार समुद्र तट, स्वादिष्ट भोजन, शांत त्यौहार और बहुत कुछ हैं! दुनिया भर से बहुत सारे लोग भारत घूमने आते हैं क्योंकि यहां सभी के लिए कुछ न कुछ है। और सबसे अच्छी बात यह है कि अन्य देशों की तुलना में भारत में यात्रा करना अक्सर सस्ता होता है।

मोहन लाल गुप्ता 2017 कालीबंगा में हमें पुराने किले मिले जो बहुत समय पहले बने थे। उनमें से कुछ अभी भी हैं लेकिन अधिकांश चले गए हैं। कुछ किले समय के साथ तय किए गए थे और आज भी हम उन्हें देख सकते हैं।

केवलादेव योजना परिक्षेत्र

केवलादेव योजना क्षेत्र केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के कारण एक विशेष स्थान है, जो कई प्रकार के पक्षियों और पौधों का घर है। बहुत से लोग इस पार्क में जाना पसंद करते हैं क्योंकि यह एक लोकप्रिय पर्यटन क्षेत्र में है। यह दुनिया के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, और इसे विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया है। पार्क बड़ा है और इसमें कई तरह के जानवर और पौधे हैं, इसलिए इसकी रक्षा करना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि इसके आस–पास के क्षेत्र का उपयोग इस तरह से किया जाए जिससे इसे नुकसान न पहुंचे। पार्क के आसपास अन्य स्थान भी हैं जो महत्वपूर्ण हैं, जैसे अस्पताल और कॉलेज। लोग घरों में भी रहते हैं और क्षेत्र में व्यवसाय करते हैं। सरकार तय कर रही है कि कैसे सुनिश्चित किया जाए कि सब कुछ इस तरह से उपयोग किया जाए जिससे पार्क को नुकसान न पहुंचे।

(IJRSSH) 2023, Vol. No. 13, Issue No. II, Apr-Jun e-ISSN: 2249-4642 p-ISSN: 2454-4671

पर्यटन क्षेत्र से जुडी समस्याएं

भूमि की समस्या :– *राजस्थान में कई ऐसी जगहें हैं जहां घूमने के लिए बहुत से लोग जाते हैं। लेकिन होटल और पर्यटकों की जरूरत की अन्य चीजों के निर्माण के लिए पर्याप्त जमीन नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों के आसपास के शहर तेजी से बढ़ रहे हैं और सारी जमीन ले रहे हैं। और अगर हमें जमीन मिल भी जाती है, तो इसमें बहुत पैसा खर्च होता है। इन पर्यटन स्थलों को बेहतर बनाने में यह एक बड़ी समस्या है।*

केन्द्रीय व राज्यीय बजट का अभाव :– *पर्यटन तब होता है जब लोग विभिन्न स्थानों की यात्रा पर जाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण उद्योग है, लेकिन सरकार इसे अन्य उद्योगों की तरह ध्यान और पैसा नहीं देती है। इसका अर्थ यह हुआ कि पर्यटन जितना बड़ा और सफल हो सकता था उतना नहीं हो पा रहा है।*

आसान शर्तों पर ऋण का अभाव :– *पर्यटन उद्योग को बहुत सारे पैसे की जरूरत होती है, लेकिन उस पैसे को वापस आने में काफी समय लगता है। इसलिए, जो लोग पर्यटन में मदद के लिए पैसा उधार देना चाहते हैं, उन्हें वापस भुगतान करना आसान बनाने की जरूरत है। लेकिन, कुछ लोग पैसा उधार नहीं देना चाहते हैं क्योंकि यह एक बड़ा जोखिम है और अपना पैसा वापस पाने में काफी समय लगता है।*

पर्यटकों के निवास की समस्या :– *राजस्थान बहुत सारे खेतों और ग्रामीण इलाकों वाला स्थान है। लेकिन, यह उन लोगों के लिए कठिन है जो वहां घूमने और दर्शनीय स्थलों को देखना चाहते हैं क्योंकि पर्यटन स्थलों में पर्याप्त फैंसी होटल नहीं हैं। इसका मतलब यह है कि कम ही लोग जानते हैं कि राजस्थान पर्यटकों के लिए कितना ठंडा है।*

पार्किंग की समस्या :– *एक स्थान पर बहुत सारे आगंतुकों के आने और दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए, उनके लिए वहाँ आसानी से पहुँचने के लिए रास्ते होना वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है अच्छी सड़कें, बसें, कारें, रेलगाड़ियाँ, हवाई जहाज और यात्रा करने के अन्य तरीके। लेकिन राजस्थान के कुछ हिस्सों में पर्याप्त अच्छी सड़कें नहीं हैं और पार्क करने के लिए एक सुरक्षित जगह ढूंढना मुश्किल हो सकता है। इससे लोगों का आना–जाना मुश्किल हो जाता है और पर्यटन उद्योग को नुकसान होता है।*

पर्यटन विकास

राजस्थान एक ऐसी जगह है जहां बहुत से लोग जाना पसंद करते हैं क्योंकि यहां देखने के लिए बहुत सारी दिलचस्प चीजें हैं। राजस्थान के कुछ हिस्से रेत से ढके हुए हैं और समुद्र की तरह दिखते हैं, जबकि अन्य हिस्सों में झीलें और नदियाँ हैं जिन्हें लोग देखना पसंद करते हैं। यहां पुराने किले और महल भी हैं जो बेहद खूबसूरत हैं। लोग लंबे समय से राजस्थान में रुचि रखते हैं और इससे वहां के पर्यटन को और अधिक लोकप्रिय बनाने में मदद मिली है। पर्यटन के बड़े उद्योग बनने से

(IJRSSH) 2023, Vol. No. 13, Issue No. II, Apr-Jun e-ISSN: 2249-4642 p-ISSN: 2454-4671

पहले ही लोग राजस्थान की यात्रा करना पसंद करते थे क्योंकि यह बहुत दिलचस्प था। एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने एक बार राजस्थान का दौरा किया और सोचा कि यह एक बहुत ही खास और खूबसूरत जगह है। राजस्थान में आगंतुकों को आकर्षित करने का एक लंबा इतिहास रहा है, और यह भारत के उन पहले स्थानों में से एक था जहाँ पर्यटन महत्वपूर्ण हो गया था।

यहां तक कि जो लोग वहां नहीं गए हैं, उन्होंने भी इसके आकर्षण के बारे में सुना है। कर्नल टॉड नाम का एक इतिहासकार राजस्थान से इतना प्रभावित हुआ कि उसने वहीं रहकर इसके इतिहास, संस्कृति और पर्यटकों के आकर्षण के बारे में लिखा। राजस्थान अपने बहादुर और साहसी लोगों के लिए जाना जाता है जिन्होंने बहुत त्याग किया है। यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है क्योंकि इसमें रेगिस्तान, पहाड़ और झील जैसे कई अलग–अलग परिदृश्य हैं। राजस्थान की भूमि बहुत ही अनोखी है क्योंकि इसमें रेतीले रेगिस्तान हैं जिनके ऊपर पक्षी उड़ते हैं, और गहरे नीले रंग की झीलें भी हैं जहाँ मछलियाँ तैरती हैं।

कोरोना वायरस महामारी और पर्यटन उद्योग

पर्यटन दुनिया भर के लोगों को नौकरी पाने में मदद करता है और लोगों को विभिन्न स्थानों और संस्कृतियों को देखने देता है। लेकिन चारों ओर फैली बीमारी के कारण बहुत से लोग यात्रा नहीं कर सकते हैं और इससे पर्यटन उद्योग को नुकसान हो रहा है

- ***आर्थिक प्रभाव***

2019 में, पर्यटन (छुट्टियों पर जाने वाले लोग) विश्व अर्थव्यवस्था के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण था और इसने कई लोगों के लिए रोजगार सृजित करने में मदद की। लेकिन 2020 के पहले पांच महीनों में कोरोना वायरस की वजह से उतने लोग यात्रा नहीं कर पाए और इससे पर्यटन उद्योग को काफी नुकसान हुआ। यह 2009 में हमारे सामने आई एक बड़ी समस्या से भी बदतर थी।

संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि चारों ओर फैली बीमारी की वजह से इस साल कम लोग दूसरे देशों की यात्रा करने जा रहे हैं। इसका मतलब है कि उन जगहों के लिए कम पैसा और पर्यटन में काम करने वाले लोगों के लिए कम नौकरियां। यह दुनिया भर में 100 मिलियन नौकरियों को प्रभावित कर सकता है।

- ***आजीविका पर प्रभाव***

पर्यटन उद्योग पर महामारी के प्रभाव के कारण गरीबी (ैक्ळ 1) और असमानता (ैक्ळ 10) में भी बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है, इसके अलावा वैश्विक स्तर पर प्रकृति और सांस्कृतिक संरक्षण से संबंधित प्रयासों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

ध्यातव्य है कि महामारी ने सतत् विकास लक्ष्यों ;ैक्ळेद्ध की प्राप्ति की गति को भी काफी धीमा कर दिया है।

पर्यटन उद्योग महिलाओं, ग्रामीण समुदायों और अन्य वंचित समूहों के लिये सदैव से ही आय का एक प्रमुख स्रोत रहा है, ऐसे में इस उद्योग पर महामारी के प्रभाव के कारण इन लोगों के समक्ष भी आजीविका का संकट उत्पन्न हो गया है।

- ***सांस्कृतिक प्रभाव***

पर्यटन तब होता है जब लोग विभिन्न स्थानों पर जाते हैं और विभिन्न संस्कृतियों के बारे में सीखते हैं। लेकिन महामारी के कारण लोग ज्यादा यात्रा नहीं कर सकते हैं और इससे विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के लिए एक–दूसरे से बात करना मुश्किल हो जाता है। इससे उन लोगों के लिए भी मुश्किल हो जाती है जो शिल्प और कपड़े जैसी चीजें बनाते हैं और उन्हें बेचकर पैसे कमाते हैं। यह विशेष रूप से उन महिलाओं को प्रभावित करता है जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं और स्वदेशी समूहों का हिस्सा हैं।

निष्कर्ष

पर्यटन तब होता है जब लोग अपनी संस्कृतियों और सभ्यताओं के बारे में जानने के लिए विभिन्न स्थानों पर जाते हैं। पर्यटन को सफल बनाने के लिए अच्छी सुविधाओं का होना और लोगों का दयालु और मेहमाननवाज होना जरूरी है। अतीत में, कुछ लोगों का मानना था कि दूसरे देशों की यात्रा करना उनके धर्म के लिए बुरा है, लेकिन अब यह गलत धारणा दूर हो गई है और पर्यटन को एक प्रतिष्ठित व्यवसाय के रूप में देखा जाने लगा है। बहुत से लोग विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हैं, जो पर्यटन उद्योग को बढ़ने में मदद करता है और अधिक धन लाता है। राजस्थान में, सरकार ऐसी नीतियां बनाकर पर्यटन को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही है जो रोजगार और आय पैदा करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। हालांकि, यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है कि पर्यटन उद्योग निरंतर विकास करता रहे।

Financial support and sponsorship: Nil

Conflict of Interest: None

संदर्भ ग्रंथ

1. *एच. भीष्मपाल (2012) पर्यटकों का आकर्षण : राजस्थान'' आकृति प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली पृ.सं. 72–75*
2. *यादव, रघुवीर (2011) ''सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल'' चन्दा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश पृ.स 98–99, 104–107*

3. *बंसल, सुरेश चन्द्र (2011) ''पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन'' साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं. 61–63, 91–92, 274–275*

4. *शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा एम. (2013) ''राजस्थान का भूगोल'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृ.सं. 8, 9*

5. *व्यास, राजेश कुमार (2004) ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (राज.) पृ.सं. 41–45, 59–63, 100–105*

6. *गुप्ता, शिव सहाय (2010) ''पर्यटन के विविध स्वरूप'' मोहित बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली पृ.सं. 46–48, 73–76*

7. रैना, ए.के., (*2009*); पर्यटन प्रबंध और व्यवहार; अभिनव प्रकाशन, अजमेर

8. गुप्ता, मोहन लाल, (*2017*); राजस्थान के प्राचीन दुर्ग (सिंधु सभ्यता से गुप्त काल तक); शुभदा प्रकाशन; जोधपुर

9. Bijender K. (2008), *Tourism Management: Problems and Prospectus*, A P H Publishing Corporation, New Delhi.
10. Raina A. K., Dr. S. K. Agarwal (2004), *The Essence of Tourism Development: Dynamics, Philosophy, and Strategies*, Sarup & Sons Publications, New Delhi
11. *सुश्री अंजू मुखर्जी– पर्यावरण परिचय, छत्तीसगढ*

12. *दिलीप कुमार मार्कण्डेय एवं नीलिमा राजवैद्य (1999) प्रकृति, पर्यावरण प्रदूषण एवं नियंत्रण, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कारपोरेशन*

13. *मोरिर्सन, जे. डब्ल्यू. (1978) पर्यटन एवं यात्रा अभिकर्ता, यात्रा अभिकर्ता संचालन पुस्तिका, एम.आर.सी.ओ. पब्लिशिंग कंपनी, न्यूयार्क, पृ. 141*

14. *नेगी जगमोहन, (1992) पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 36*

15. *कैशम्बी दमोदर धर्मानन्द, (1997) प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 38*

16. Dhakde, V. (2022). A Study on Ideals of Kabir Das and His Contribution in Human Unity . *International Journal for Global Academic & Scientific Research*, 1(1), 34–38. https://doi.org/10.55938/ijgasr.v1i1.8

REFERENCES

1. H. Bheeshmpal (2012); *Paryatakon ka Akarshan: Rajasthan*; Akriti Publication, Shahdara, Delhi, Page 72-75
2. Yadav, Raghuvir (2011); *Sampoorn Bharat ke Sanskritik Paryatan Sthal*; Chanda Publications, Allahabad, Uttar Pradesh, pg 98-99, 104-107
3. Bansal, Suresh Chandra (2011); *Paryatan Bhoogol evum Yatra Prabandhan;* Sahitya Sagar Publication; Chauda Rasta, Jaipur, pg 61-63, 91-92, 274-275

4. Sharma, H.S. and Sharma M., (2013), *Rajasthan ka Bhoogol*; Panchsheel Publication, Jaipur, pg 8,9
5. Vyas, Rajesh Kumar, (2004); *Rajasthan me Paryatan Prabandh;* Rajasthani Granthagaar, Jodhpur (Rajasthan), pg 41-45, 59-63, 100-105
6. Gupta, Shiv Sahay (2010); *Paryatan ke Vividh Swaroop;* Mohit Books International, New Delhi, pg 46-48, 73-76
7. Raina, A.K., (2009); *Paryatan Prabandh aur Vyavhaar;* Abhinav Publication, Ajmer
8. Gupta, Mohan Lal, (2017); *Rajasthan ke Pracheen Durg (Sindhu Sabhyata se Gupt Kaal tak)*; Shubda Publication; Jodhpur
9. Bijender K. (2008), *Tourism Management: Problems and Prospectus*, A P H Publishing Corporation, New Delhi.
10. Raina A. K., Dr. S. K. Agarwal (2004), *The Essence of Tourism Development: Dynamics, Philosophy, and Strategies*, Sarup & Sons Publications, New Delhi
11. Ms Anju Mukherjee- *Paryavaran Parichay*, Chhattisgarh
12. Dilip Kumar Markandey and Neelima Rajvaidya; (1999); *Prakriti, Paryavaran Pradooshan evum Niyantran;* APH Publishing Corporation
13. Morrison, J.W., (1978); *tourism and travel agents*, Travel Agents Operation Manual; MRCO Publishing Company, New York, pg 141
14. Negi Jagmohan (1992); *Paryatan evum Yatra ke Siddhant*; Takshshila Publication, New Delhi, pg 36
15. Kaishambi Damodar Dharmanand (1997); *Pracheen Bharat ki Sanskriri aur Sabhyata,* Rajkamal Publication, New Delhi, pg 38
16. Dhakde, V. (2022). A Study on Ideals of Kabir Das and His Contribution in Human Unity . *International Journal for Global Academic & Scientific Research*, 1(1), 34–38. https://doi.org/10.55938/ijgasr.v1i1.8